IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी सिनेमा और बुनियादी शिक्षा व्यवस्था की ज़मीनी हकीक़त विशेष संदर्भ: प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था पर आधारित हिंदी फिल्में 'आई.एम.कलाम', 'तारे ज़मीन पर' और 'स्टैंनली का डिब्बा'।

सतेंद्र बंसल

पीएच.डी हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।

ई-2/254 मेन पुस्ता रोड पाँचवा पुस्ता सोनिया विहार दिल्ली - 110090.

शोधसार : शिक्षा, मानव जीवन एवं राष्ट्र की प्रगति और उन्नति का सशक्त साधन है। उदाहरणस्वरूप नींव जितनी मजबूत होती है, इमारत उतनी ही सशक्त और विशाल होती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के बुनियादी शिक्षा के अंग में हमेशा से खामियाँ बनी रही है, जो राष्ट्र की बुनियादी शिक्षा बदहाली को दर्शाता है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था में बच्चों की शिक्षा अनिवार्य रूप से उस राष्ट्र के वैश्विक शिक्षा के स्तर का आधार निर्धारित करती है, अगर बच्चों का शिक्षण उद्देश्य पूर्ण और सफल न हो तो राष्ट्र का शैक्षिक स्तर पर विकास असंभव है। वर्तमान में उसी का परिणाम है कि विश्व के शीर्षस्थ विश्वविद्यालयों में भारत के विश्वविद्यालय का एक भी विश्वविद्यालय शामिल नहीं है। अर्थात् जिस वृक्ष की जड़े खोखली होती है, वह वृक्ष कभी भी हरा-भरा और विशाल नहीं होता है।

बुनियादी शिक्षा की बदहाली को रेखांकित कर देने भर से इस पर्चे का उद्देश्य पूर्ण नहीं होगा, अपितु प्रस्तुत शोध लेख बुनियादी शिक्षा की निम्नलिखित समस्याओं को उठाते हुए उनसे निज़ात पाने की राह खोजने का प्रयास करेगा। शिक्षा व्यवस्था की कमियों, शिक्षा प्राप्त करने में आर्थिक विषमता की समस्या के विविध आयामों को प्रस्तुत कर आदर्श शिक्षण व्यवस्था के स्वरूप को प्रस्तुत करेगा।

स्पष्टत: बुनियादी शिक्षा की बदहाली को खत्म कर छात्रों के मन में शिक्षा के प्रति कसाई समान भय की तस्वीर को उनके मस्तिष्क से मिटाकर, शिक्षा के प्रति जिज्ञासा और उत्साह के भाव को स्थापित करके उन्हें शिक्षा से जोड़ा जा सके, ताकि शिक्षा नैतिक मूल्य के आधार पर उनके जीवन में सर्वांगीण विकास की दृष्टि से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे। ऐसे आदर्श समाज की स्थापना सिर्फ बच्चों की दृष्टि से अनिवार्य नहीं है, अपितु राष्ट्र और मानव सभ्यता के विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

कीवर्ड्स

Powerless - शक्तिहीन, **Insight** - दृष्टिगत, **Neutrality** - तटस्थता, **Commercialization of education** - शिक्षा का व्यापारीकरण, **Straight forward** - बेबाक, **Traumatic** - पीड़ाजन्य, **All round** - सर्वांगीण, **Emotional** - संवेगात्मक, **Active** - क्रियाशील, **Exemplary** - अनुकरणीय।

फिल्में एक विश्वसनीय और सशक्त माध्यम है, जिसके जरिए समाज की अंतिम इकाई से लेकर शीर्ष इकाई तक को जोड़ने का सहज एवं परिवर्तनकारी कार्य संभव है। स्पष्टत: भारतीय शिक्षा प्रणाली की मौजूदा समस्याओं को समझने में भारत असफल रहा है, लेकिन हिंदी फिल्में बड़ी गहनता के साथ समस्या की जटिलता को समझने एवं समझाने में न केवल सफल रही हैं अपितु भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की उम्मीद भी कायम करती दृष्टिगत हुई है।

विकास के क्षेत्र में जहाँ अन्य राष्ट्रों ने अपनी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से अपने स्वरूप को नित गतिशील, समृद्ध एवं शक्ति संपन्न बनाया, वहीं भारतीय शिक्षा प्रणाली का स्तर निरंतर गिरता रहा और यही कारण है कि आज भारत का वैश्विक महत्व लगातार घटता जा रहा है। शिक्षा मानव जीवन को सुगम एवं गतिशील बनाने की महत्वपूर्ण इकाई है, या यूं कहिए कि महत्वपूर्ण अंग क्योंकि शिक्षा का मूल आधार एवं उद्देश्य विकास का माध्यम है, जिसके द्वारा मानव ने विकास के मार्ग को प्रशस्त किया, परंतु शिक्षा प्रणाली के शक्तिहीन होने मात्र से एक समाज की दुर्बलता उस घुन खाए अनाज से अधिक कुछ नहीं जिसका बाहरी स्वरूप तो लगभग ठीक–ठाक प्रतीत होता है, परंतु उसकी आंतरिक बनावट उतनी ही खोखली और सारहीन होती है।

''फिल्म मनोरंजन का उत्तम माध्यम है, लेकिन वह ज्ञान वर्धन के लिए भी अत्यंत बेहतरीन माध्यम है।'' {दादा साहब फाल्के}

शिक्षा एक समृद्ध फलदार वृक्ष है तो बुनियादी शिक्षा उस वृक्ष का बीज है। बीज का ध्यान न रखा जाए तो वृक्ष का निर्माण असंभव है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में हमेशा से ही बुनियादी शिक्षा का अभाव बना रहा है। बड़ी ही तटस्थता के साथ इस पहलू को फिल्म **आई.एम.कलाम, तारे ज़मीन पर** और **स्टैनली का डिब्बा** स्पष्टत: दर्शाती हैं। बुनियादी शिक्षा के संबंध में भारत की मौजूदा स्थिति आधारहीन है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के ढाँचे को देखें, तो उनमें तीन बिंदुओं को ही महत्व प्रदान किया गया है। जिसमें प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा शामिल है। पूर्ण रूप से असफल रही आगनवाड़ी शिक्षा व्यवस्था और पूर्व प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था औपचारिकता मात्र साबित हुई है।

बुनियादी शिक्षा के अर्थ से संबंध बच्चों के 6 से 14 वर्ष के प्राथमिक शिक्षा–शिक्षण व्यवस्था से होता है। भारतीय शिक्षा कानून के तहत यह जिम्मेदारी भारतीय प्रशासन व्यवस्था की है कि वह इस स्तर के विद्यर्थियों के लिए नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था का प्रावधान करें, इसलिए मौजूदा स्थिति को देखते हुए कह सकते हैं कि प्रशासन द्वारा अब तक इस क्षेत्र में गंभीरता से कोई भी प्रभावी कदम नहीं उठाया गया, जिसका उदाहरण है कि प्राथमिक शिक्षा स्तर की बुनियादी समस्याएं जैसे शिक्षा प्राप्ति हेतु आर्थिक समस्या, पाठ्यक्रम की समस्या, शिक्षक एवं शिक्षण की समस्या, शैक्षणिक संस्थानों का अभाव, स्वास्थ्य एवं खेल शिक्षा का अभाव, हैप्पीनेस शिक्षा का अभाव, शिक्षा के व्यवसायीकरण की समस्या एवं राइट टू एजुकेशन, (RTE) भ्रष्टाचार इत्यादि समस्या के कारण भारतवर्ष में बुनियादी स्तर पर विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने की आयु में बाल मजदूरी करने को विवश बाल मजदूरी के दलदल में फंसा हुआ है।

स्पष्टत: आर्थिक समस्या से जूझता बाल मजदूर बुनियादी शिक्षा से वंचित लाखों की तादाद में बाल श्रम एवं शोषण रूपी हैवान के मुख्य द्वार पर रोजाना अपने विद्यार्थी रूप का दम घोट रहा है, जोकि भारतीय बुनियादी शिक्षा व्यवस्था की समस्याओं की काली तस्वीर पेश करता है। इस पहलू को बड़े ही बेबाक ढ़ंग से फिल्म **आई.एम. कलाम** एवं **स्टैंनली के डिब्बा** ने उठाया है या यूं कहें कि ये फिल्में तमाम उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हुई नजर आती हैं जो कि आर्थिक समस्या के चलते शिक्षा से वंचित रह जाते हैं । भारतीय बुनियादी शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्न के रूप में एक बड़ा कदम है। यह शब्द न केवल कलाम के हैं, अपितु बुनियादी शिक्षा के अभाव में जी रहे लाखों भारतीय बाल मजदूरों के हैं जिनकी पीड़ाजन्य स्थिति से हमारा हृदय नहीं कचोटता।

होटल ढाबे के गंदे बर्तन साफ करता छोटू

ट्रक , बस आयल में सना हुआ छोटू

मैडम के बच्चे को नन्हे हाथों से खिलाता छोटू

मालिक की डांट खाता छोटू

बाबा के कंधे बैठ मेला जाना चाहता है छोटू

मां की लोरी सुनना चाहता है छोटू

टीचर की प्यार भरी डांट खाना चाहता है छोटू

छोटू को एक नाम चाहिए

छोटू के सपनों को पहचान चाहिए

क्या आप देंगे ??? { आई.एम. कलाम 1:14:00-1:16:00 }[1]

''1991 की जनगणना के अनुसार बाल मजदूरों का आँकड़ा 11.3 मिलियन था, 2001 में यह आँकड़ा बढ़कर 12.7 मिलियन पहुँच गया ''। इसके साथ ही एनजीओ के अनुसार 50.2% ऐसे बच्चे हैं जो सप्ताह के सातों दिन काम करते हैं। 53.5% यौन प्रताड़ना के शिकार हो रहे हैं। इसमें से हर दूसरे बच्चे को किसी न किसी तरह के भावनात्मक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है 50% बच्चे शारीरिक प्रताड़ना की शिकार हो रहे हैं''।[2]

जहाँ एक तरफ विश्वभर के शिक्षाविद विद्वान यह परिकल्पना करते हैं कि शिशुओं के विकास की दृष्टि से यह अतिमहत्वपूर्ण है बाल जीवन में, उनके सर्वांगीण विकास के पहलू से आरंभ के 2 से 6 वर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ये शुरुआती 2 से 6 वर्ष न केवल उनके शारीरिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण माने जाते हैं अपितु उनके मानसिक संवेगात्मक तथा भावनात्मक विकास की नजर से भी अहम होते हैं।

जीन पियाजे महोदय के संज्ञानात्मक एवं प्रभावी विकास के सिद्धांत के अनुसार– **''सिद्धांत एवं काल्पनिक सोच तथा अमूर्त तर्क शक्ति का विकास इन्हीं दिनों में होता है। इस अवस्था में बालकों में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा दुनिया को समझने के प्रति जिज्ञासा तथा जिंदगी की उद्देश्य और अर्थ को बदलने की प्रबल इच्छा होती है''।[3]**

क्रिस्प के अनुसार – **''सुख शिक्षा के एकमात्र स्वाधीन उपलब्धि है''।[4]**

बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में जहाँ विद्वानों की परिकल्पना है कि बच्चों को सुगम और समृद्ध शिक्षा देनी चाहिए। इसके साथ ही ऐसी शिक्षण पद्धति हो जो उन्हें खुशी प्रदान करे, लेकिन फिल्म आई. एम. कलाम और स्टैंनली का डिब्बा इस परिकल्पना के ठीक विपरीत बुनियादी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के कटु यथार्थ को हमारे सामने न सिर्फ प्रस्तुत करती हैं, अपितु इस व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह की पहल करती

---

[1] आई.एम.कलाम (2010), 720p web HD (Hindi) MKV movies.com, youtube

[2] स्वप्ना कुमार: मजदूरी के दलदल में फंसा बचपन, वेबदुनिया / 9 नवंबर 2019

[3] **Grade 1 teacher's handbook for happiness class state council of education research and training Delhi and the directorate of education government of NCT of Delhi.**

[4] **Nursery and KG teacher's handbook for happiness class state council of education research and training Delhi and directorate of education government of NCT of Delhi.**

हैं। इसके साथ ही फिल्म तारे ज़मीन पर शिक्षा–शिक्षण की समस्या पर प्रकाश डालते हुए भारतीय शिक्षा व्यवस्था की बोझिल पाठ्यक्रम एवं पठन–पाठन की समस्या का विरोध करती है। साथ ही आदर्श शिक्षण शैली को प्रस्तुत कर परिवर्तन की माँग और सकारात्मक सुधार की उम्मीद पैदा करती है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुसार वर्ष 2001 में, **''8.1 लाख बच्चे 6 से 14 वर्ष की आयु में स्कूल छोड़ देते हैं''।**[5]

भारतीय शिक्षा व्यवस्था का बुनियादी पहलू प्रशासनिक समस्याओं और कमियों से इस सीमा तक लबरेज़ है कि जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों का पाठ्यक्रम के प्रति अरुचिकर होना स्वाभाविक है। प्रशासन व्यवस्था के अभिशाप ने शिक्षा को मानसिक पीड़ा का रूप दे दिया है। भारत में पिछले कुछ वर्षों के बदलावों की गति हज़ार वर्षों की रफ्तार से हुई है, किंतु शिक्षा करिकुलम की पद्धति आज भी उसी पुरातन ढर्रे पर टिकी हुई है। पुरानी पढ़ाई, पुरानी केस स्टडी, पुराने सब्जेक्ट एवं वही पुराने मैनेजमेंट थ्योरीज हैं।

''जानता हूं बाहर एक बेरहम कम्पीटेंट दुनिया बसी है और इस दुनिया में सभी को अपने–अपने घरों में टॉपर्स और रैंकर्स उगाने हैं। हर किसी को अब्बल नंबर चाहिए डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजमेंट इससे कम तो बर्दाश्त ही नहीं। 95.5%, 95.6%,95.7% इससे कम तो गाली के बराबर क्यों? अरे जरा सोचो हर बच्चे की अपनी खूबी होती है, अपनी काबिलियत होती है, अपनी चाहत होती है। लेकिन नहीं हर उंगली को खींचकर लंबी करने में लगे हैं, सब। लगे रहो चाहे उंगली क्यों ना टूट जाए। {तारे ज़मीन पर ....1:39:00–1:47:00}[6]

शिक्षा व्यवस्था के द्वारा असफल प्रयास के रूप में चयनित किए गए ग्रेडिंग सिस्टम के कारण विद्यार्थी जीवन पर पड़ने वाले नकारात्मक दबाव को **तारे जमीन पर** फिल्म के जरिए दर्शकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है।

बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत कई राष्ट्रों की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को क्रियाशील बनाने में कारगर सिद्ध हुए हैं, साथ ही शिक्षा के मामले में उन्हें एक अलग पहचान प्रदान की है। वैश्विक स्तर पर बेहतरीन एवं उत्तम शिक्षा व्यवस्था का उदाहरण फिनलैंड भी है, फिनलैंड बच्चों की बुनियादी शिक्षा को विशेष महत्त्व देने वाला एक ऐसा राष्ट्र है, जो विश्व भर के सभी राष्ट्रों की शिक्षा व्यवस्था को वैज्ञानिकता के आधार पर आँकने के पश्चात् ही अनुकरणीय मानता है अथवा मान्यता प्रदान करता है। फिनलैंड अपनी स्कूली शिक्षा के शुरुआती सालों को अर्थात् 7 से 16 वर्ष तक की आयु के बच्चों की एक दफ़ा परीक्षा पर ही बल देता है फिनलैंड का मानना है कि बार–बार ली जाने वाली परीक्षाएँ बच्चों की मानसिकता को प्रभावित करते हुए उनकी शिक्षा के प्रति रुचि पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

इसमें कोई भी दोराय नहीं है कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था की बुनियादी कमजोरियों को समझने में फिल्में सक्षम दृष्टिगत होती एवं बुनियादी शिक्षा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ के समतुल्य होती है। भारतीय शिक्षा की मौजूदा स्थिति और समस्याएँ, फिल्मों के विषय के महत्व को बढ़ा देते हैं। बुनियादी शिक्षा व्यवस्था पर केंद्रित फिल्में जिसमें **तारे जमीन पर** विश्व भर में, सर्वमान्य प्राथमिक शिक्षा सिद्धांत को पूर्ण करने में असमर्थ भारतीय प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था की तस्वीर प्रस्तुत करती है उदाहरणस्वरूप ईशान की तरह डिस्लेक्सिया से ग्रसित न होते हुए भी बुनियादी शिक्षा की समस्या का ख़ामियाज़ा न जाने कितने ईशान भोग रहे हैं **आई.एम.कलाम** और **स्टैंनली का डिब्बा** प्रशासन व्यवस्था और आर्थिक समस्या से जूझ रहे शिक्षा से वंचित बाल मजदूरों की समस्या के अर्थ को धरातल पर रखती है। "नई शिक्षा नीति" बुनियादी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन की परिकल्पना प्रस्तुत करती है। साथ ही राजनीतिक संगठनों के बीच समर्थन और विरोध का विषय बनी हुई

[5] मानव संसाधन विकास मंत्रालय 2001 की रिपोर्ट।

[6] **तारे जमीन पर (2007),720p full HD Hindi movie, YouTube channel movie world 15sep2018,8:49am**

है, देखना यह है कि इसकी सार्थकता से क्या देश में बालक कलाम, ईशान और स्टैंनली की शैक्षिक समस्याओं का निदान हो सकेगा या नहीं?

संदर्भ सूची

- आई.एम.कलाम (2010), 720p web HD (Hindi) MKV movies.com, youtube
- स्वप्ना कुमार : मजदूरी के दलदल में फंसा बचपन, वेबदुनिया / 9 नवंबर 2019, 12:40 a.m.
- Grade 1 teacher's handbook for happiness class state council of education research and training Delhi and the directorate of education government of NCT of Delhi.
- Nursery and KG teacher's handbook for happiness class state council of education research and training Delhi and directorate of education government of NCT of Delhi.
- मानव संसाधन मंत्रालय की रिपोर्ट 2001
- तारे जमीन पर (2007),880p full HD Hindi movie, YouTube channel movie world 15sep2018,8:49am

सहायक सूची

- हिंदी मीडियम (2017), home/ Bollywood hindi medium - DVD rip/download HDmp4mania, 26Ayg.2019, 07:05am
- चॉक एन डस्टर (2016), Chalk N Duster full movie with English subtitles Youtube channel Movies and Seasons,22sep2018,05:00pm
- जागृति 1965
- मनीष सिसोदिया, शिक्षा, पेंगुइन इंडिया
- भारतीय शिक्षा की समस्याएं और प्रवृतियां (अकाउंट नंबर 683259 आर्ट्स लाइब्रेरी दिल्ली यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी सिस्टम)
- डॉक्टर एस.के. मंगल, डॉ उमा मंगल, बाल्यकाल एवं वृद्धि उन्मुख बालक, टंडन पब्लिकेशन लुधियाना
- डॉ.प्रसून विनोद कुमारी, अधिगम एवं शिक्षण, ठाकुर पब्लिकेशन लखनऊ
- डॉक्टर सविता सक्सेना, डॉक्टर अनिल कुमार, विषयों एवं विद्यालयीय विषय की समझ, ठाकुर प्रकाशन लखनऊ

- कृष्ण कुमार, राज समाज और शिक्षा, राजकमल प्रकाशन
- डॉ मंजू मुकुल, संप्रेषण : चिंतन और दक्षता, शिवालिक प्रकाशन, शक्ति नगर दिल्ली
- डॉ अनिल सदगोपाल, सरकारी शैक्षिक समितियां – आयोग : लोकतांत्रिक सलाह– मशविरे का ढोंग, शिक्षानीति निर्माण के चार अनुभव, अखिल भारत शिक्षा संघर्ष यात्रा 2014 प्रकाशन श्रृंखला (अखिल भारत शिक्षा अधिकार मंच)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (विधेयक भारत सरकार)
- गोविंद मिश्र, धूल पौधों पर, वाणी प्रकाशन दिल्ली